अव्यय

अव्यय - अर्थ एवं प्रयोग

'अ' + 'व्यय'

अर्थात, जिसका व्यय न हो। अन्य शब्दों में कहें तो वे शब्द जिनमें परिवर्तन (व्यय) नहीं होता, अव्यय कहलाते हैं।

जैसे: अत्र, तत्र, अद्य, श्व आदि अव्यय हैं।

यहाँ हम आपको कुछ प्रमुख अव्ययों के अर्थ तथा उनके प्रयोग के बारे में बता रहे हैं।

(1) अत्र

'अत्र' का अर्थ होता है **'यहाँ'**।

अहम् <u>अत्र</u> आगच्छामि।

मैं यहाँ आता हूँ।

(2) तत्र

'तत्र' का अर्थ होता है **'वहाँ'**।

स एव <u>तत्र</u> क्रीडति।

वह भी वहाँ खेलता है।

(3) कुत्र

'कुत्र' का अर्थ होता है **'कहाँ'**।

त्वं <u>कुत्र</u> वससि?

तुम कहाँ रहते हो?

(4) यत्र

'यत्र' का अर्थ होता है **'जहाँ'**।

अहं <u>यत्र</u> गच्छामि, साऽपि तत्र आगच्छति।

मैं जहाँ जाता हूँ वह भी वहीं आ जाती है।

(5) सर्वत्र

'सर्वत्र' का अर्थ होता है **'सब जगह'**।

संसारे <u>सर्वत्र</u> कृष्ण: अस्ति।

संसार में सभी जगह कृष्ण हैं।

(6) अन्यत्र

'अन्यत्र' का अर्थ होता है **'अन्य जगह'**।

स: धन्नस्य हेतु <u>अन्यत्र</u> वसति।

वह धन के लिए अन्य जगह पर रहता है।

(7) यदा

'यदा' का अर्थ होता है **'जब'**।

अहं खेलिष्यामि यदा सऽपि खेलिष्यति।

जब मैं खेलूंगा, वह भी खेलेगा।

(8) तदा

'तदा' का अर्थ होता है **'तब'**।

सा <u>तदा</u> आगमिष्यति यदा स: गमिष्यति।

वह तब आएगी जब वह जाएगा।

(9) एकदा

'एकदा' का अर्थ होता है **'एक बार'**।

एकदा <u>अहं</u> इलाहबादं अगच्छन्।

एक बार मैं इलाहबाद गया।

(10) सदा

'सदा' का अर्थ होता है **'हमेशा'**।

अहं सदा सत्यं वदानि।

मैं हमेशा सत्य बोलता हूँ।

(11) सर्वदा

'सर्वदा' का अर्थ होता है **'हमेशा'**।

स: सर्वदा परिश्रम: न करोति।

वह हमेशा परिश्रम नहीं करता है।

(12) च

'च' का अर्थ होता है **'और**'।

राम: श्याम: च वने गच्छत:।

राम और श्याम वन में जाते हैं।

(13) अपि

'अपि' का अर्थ होता है **'भी**'।

सीताऽपि वनं गच्छति।

सीता भी वन जाती है।

(14) अद्य

'अद्य' का अर्थ होता है - **'आज'**।

मम मातुल: अद्य आगच्छति।

मेरे मामाजी आज आ रहे हैं।

(15) श्वः

'श्वः' का अर्थ होता है **'आने वाला कल'**।

त्वम् श्वः कुत्र गमिष्यसि?

तुम कल कहाँ जाओगे?

(16) ह्यः

'ह्यः' का अर्थ होता है **'बीता हुआ कल'**।

ह्यः वयम् जन्तुशालां अपश्याम।

कल हमने चिड़ियाघर देखा।

(17) प्रातः

'प्रातः' का अर्थ होता है **'सुबह'**।

अहः प्रातः ईश्वरं भजामि।

मैं सुबह ईश्वर का भजन करता हूँ।

(18) सायम्

'सायम्' का अर्थ होता है **'शाम'**।

अहं सायम् उद्यानं गमिष्यामि।

मैं शाम को उद्यान जाऊँगा।

(19) अहर्निशम्

'अहर्निशम्' का अर्थ होता है **'दिन-रात'**।

सैनिका अहर्निशं भारतं सेवन्ते।

सैनिक दिन-रात भारत की सेवा करते हैं।

(20) अधुना

'अधुना' का अर्थ होता है **'अब'**।

त्वम् अधुना किं पठसि?

आप अब क्या पढ़ते हो?

(21) एव

'एव' का अर्थ होता है - **'ही'**।

स मम सहैव क्रीड़ति।

वह मेरे साथ ही खेलता है।

(22) कुत:

'कुत:' का अर्थ होता है **'कहाँ से'**।

भवान् कुत: आगच्छति?

आप कहाँ से आते हो?

आप उपरोक्त दिए गए अव्ययों की सहायता से कम-से-कम दो-दो सरल वाक्य बनाने का प्रयास करें। आप देखेंगे कि इन अव्ययों के प्रयोग से संस्कृत अनुवाद और भी सरल हो जाता है।